

19वीं सदी के प्रारम्भ में बाँदा जनपद का सामाजिक परिदृश्य

डॉ० आदित्य नरायण सिंह

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय

बाँदा जनपद बुन्देलखण्ड का पूर्व का क्षेत्र है जहाँ निश्चित क्षेत्र अन्तराल में भाषाई विविधता पाई जाती है। यह विविधता जसपुरा क्षेत्र से प्रारम्भ होकर मानिकपुर तक विविध आयाम धारण करती है। यह भाषाई विविधता बाँदा की संस्कृति को न केवल विशिष्टता प्रदान करती है बल्कि मूल संस्कृत के शब्दों की अधिकता अपभ्रंश के रूप में यह दर्शाती है। जनपद वाह्य भाषायी प्रभावों से अधिकांशतः मुक्त रहा बाँदा में विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों की विविधता परिलक्षित होती है। बाँदा जनपद में 19वीं शताब्दी के प्रारम्भिक रिकार्ड 1818 से प्राप्त होते हैं जब अर्सकिन को बाँदा का पहला कलेक्टर बनाया गया तथा 1819 में बाँदा को एक पूर्ण जिले का दर्जा दिया गया। 1848 में पहली बार जनपद की जनगणना का अनुमान लगाया गया, जबकि 1853 में सुनिश्चित जनगणना की गयी। 1853 की जनगणना के अनुसार कुल 7,43,872 जनसंख्या बाँदा जनपद में थी। इसी वर्ष जनपद का सम्पूर्ण क्षेत्रफल 3009.6 वर्ग मील मापा गया। जिसके आधार पर जनसंख्या घनत्व 247 प्रति वर्गमील निर्धारित की गयी 1853 में कुल 1143 गाँव एवं कस्बे मौजूद थे जिसमें केवल बाँदा की जनसंख्या दस हजार से अधिक थी। 1857 की घटनाओं से उत्प्राजन भी हुआ। बाँदा में ब्रिटिश अधिकार के कारण इसाई मिशनरियों की गतिविधियाँ भी बढ़ी अतः नवाबी शासन में बाँदा के सामाजिक परिदृश्य को निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत बांटा जा सकता है। बाँदा में परम्परागत रूप से बहुसंख्य-जनसंख्या हिन्दुओं की थी। 1853 की जनगणना के अनुसार जिले में 94 प्रतिशत जनसंख्या हिन्दुओं की थी। इस जनसंख्या में से 85 प्रतिशत किसी विशेष सम्प्रदाय से जुड़े हुये नहीं थे। हिन्दू जनसंख्या में 2.5 प्रतिशत शैव, 5 प्रतिशत वैष्णव, 2 प्रतिशत लिंगापत सम्प्रदाय के अनुयायी थे। हिन्दू 117 से अधिक जातियों में विभाजित थे। ब्राह्मण, राजपूत, चमार, अहीर, काछी, केवट, कुर्मी जातियाँ मिलकर कुल हिन्दू जनसंख्या का 60 प्रतिशत थी।

¹ यह आंकड़ा नवाब अलीबहादुर द्वितीय के कार्यकाल का है। नवाब शमशेर बहादुर द्वितीय तथा नवाब जुल्फिकार अली के कार्यकाल के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। अतः 1853 के आंकड़ों से पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। हिन्दू जनसंख्या में ब्राह्मण 15.5 प्रतिशत या 92,397 थे। ब्राह्मणों का वर्चस्व चित्रकूट के पवित्र तीर्थ के आसपास था। बाँदा पैलानी तथा बंदौसा में इनकी जनसंख्या अधिक थी तथा ये विभिन्न स्थानों पर भूमि स्वामी थे। ब्राह्मणों में जुझौतियों तथा कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की संख्या लगभग बराबर थी। राजपूत या ठाकुर जनसंख्या में लगभग 8.3 प्रतिशत का योगदान करते थे। भूमि अधिकारों के संदर्भ में राजपूत सशक्त थे। बाँदा में संख्या के हिसाब से बैस राजपूत सर्वाधिक थे बैस राजपूत रायबरेली (अवध) की त्रिलोकचन्दी शाखा से सम्बन्धित थे।² संख्या की दृष्टि से दिखित राजपूत दूसरे स्थान पर थे जो कि परम्परानुसार बैस राजपूतों से उच्च स्थान पर आते थे। दिखित राजपूतों की अधिकांश जनसंख्या पैलानी, सिमौनी, बेंदा, जौहरपुर तथा जसपुरा क्षेत्र में निवास करती थी।³ दिखित राजपूतों का मूलस्थान अवध में

1 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, 'डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज', आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर', इलाहाबाद, 1909, पृ.85

2 इलियट, सर हेनरी एम., 'मेमोयर्स ऑन द हिस्ट्री फोक लोर एण्ड डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ द रेसेज ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेज ऑफ इण्डिया', ट्रबनर एण्ड कम्पनी, लन्दन, 1859, पृ.83

3 एटकिन्सन, ई.टी., 'स्टेटिस्टिकल, डिसक्रिप्टिव एण्ड हिस्टोरिकल एकाउण्ट ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्रोविन्सेस ऑफ इण्डिया-बुन्देलखण्ड', इलाहाबाद, 1874, पृ.73

‘कोट झलोखर’ था।⁴ औरंगजेब के शासनकाल में दिखित राजपूतों के नेता राव रामकिशन ने मनसबदारी में स्थान प्राप्त किया था। दिखित राजपूतों ने 1857 के विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई थी। वैश्य तथा दिखित राजपूतों ने दिखित राजपूतों के अतिरिक्त पवार, जनवार, रघुवंशी, मौहर, बागड़ी, गौर, गौतम, बाँदा के प्रमुख राजपूत जातियाँ थी इनके अतिरिक्त बहुत कम संख्या में चन्देल, बुन्देला, चौहान, बिसेन तथा कछवाह भी बाँदा जनपद में थे। बाँदा जनपद में अहीर कुल हिन्दू जनसंख्या का 9.9 प्रतिशत थे। कैडेल के सेटेलमेन्ट के अनुसार बाँदा में 5 प्रतिशत इस जाति के पास थी।⁵ कोरी जनसंख्या में अहीरों के पश्चात् थे कुर्मी यद्यपि कुल जनसंख्या का 4 प्रतिशत थे तथापि 10 प्रतिशत जमीनों पर इस जाति का अधिकार था। व्यापारी वर्ग बाँदा नगर में केन्द्रित था। बाँदा के नगर सेठ के रूप में उदयकर्ण का नाम प्राप्त होता है। व्यापारियों में अग्रवाल, अग्रहरि, केसरवानी, प्रमुख थे। बबेरू के व्यापारिक क्षेत्र में रस्तोगी व्यापारी प्रमुख थे। बाँदा नगर में कायस्थ पर्याप्त संख्या में थे। जिसमें जदोराम कायस्थ का परिवार कानूनगों परिवार के नाम से जाना जाता था। कायस्थ प्रायः तहसील के कर्मचारियों के रूप में कार्य करते थे। अन्य हिन्दू जातियों में कहार, कुम्हार, भरभूँजा, बढई, लोहार, नाई इत्यादि शामिल थे। उपरोक्त के अतिरिक्त कलार, खटिक, कोल, गोंड भी पर्याप्त संख्या में थे।

1853 में मुस्लिम जनसंख्या बाँदा में पर्याप्त मात्रा में थी यद्यपि मुस्लिम जनसंख्या का केन्द्रीकरण बाँदा नगर में अधिक था तथापि धर्मान्तरित मुस्लिम गिरवां, गौरीखानपुर, आलमपुर, अदरी, सादीमदनपुर, हरदौली बगेहटा, अनौसा, हथेरा, सिमौनी, औगासी इत्यादि प्रमुख गांव में निवास करते थे। बाँदा में कुल मुस्लिम जनसंख्या का 98.5 प्रतिशत सुन्नी मुसलमान थे तथा 1.5 शिया थे। मुस्लिमों में शेख, सैयद, राजपूत, पठान तथा मुगल सर्वाधिक महत्वपूर्ण थे। शेख कुल मुस्लिम जनसंख्या का 46.4 प्रतिशत थे। शेख जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा बाँदा तहसील में केन्द्रित था। शेख कुरैशी तथा सिद्दीकी उपशाखाओं में विभक्त थी। पठान शेख जनसंख्या के बाद दूसरे स्थान पर थे तथा इनका भी केन्द्रीकरण बाँदा तहसील में था। सैयद कुल मुस्लिम जनसंख्या का 7.4 प्रतिशत थे। यमुना किनारे औगासी में केन्द्रित थे। अन्य मुस्लिमों में बेहना, जुलाहा, कस्साब, नाई, दर्जी, छीपी, चुरिहार, धोबी इत्यादि प्रमुख थे तथा इन जातियों के अतिरिक्त राजपूत मुस्लिम जो कि धर्मान्तरित मुस्लिम थे, पर्याप्त संख्या में मौजूद थे।⁶ इसाई जनसंख्या में अत्यधिक कम संख्या में थे। बाँदा के सामाजिक ढाँचे को समझने के लिये समाज के प्रत्येक वर्ग का अध्ययन समीचीन होगा।

बाँदा जनपद में हिन्दू सर्वाधिक संख्या में थे, तथापि ये 117 से अधिक जातियों में बटे हुये थे। जातिगत आधार पर हिन्दुओं में असमानता का स्तर काफी ऊँचा था। ब्राह्मण हिन्दुओं में सर्वाधिक शिक्षित जाति थी जो कि परम्परागत रूप से संस्कृत शिक्षा प्राप्त कर शैक्षणिक स्तर को ऊँचा बनाये हुये थी। तुलनात्मक रूप से राजपूत अशिक्षा के शिकार तथा शिक्षा के प्रति राजपूतों की सक्रियता नगण्य थी। यद्यपि दोनों ही जातियाँ बड़े काश्तकारों में शामिल थी तथापि जनपद में इन दोनों जातियों के रहन-सहन तथा खान-पान के स्तर भिन्न थे। सम्पूर्ण बाँदा में बुन्देली भाषा बोली जाती थी परन्तु जैसा की जिक्र किया जा चुका है कि जनपद में क्षेत्रियता के आधार न भाषायी विविधता पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थी। क्षेत्रियता के आधार पर बुन्देली को मारी, काही, मारगतई, तिरहारी, इत्यादि रूपों में जाना जाता था। मराठों तथा मुस्लिमों के प्रभाव में फारसी एवं

4 बिंगले, कैप्टन ए.एच., ‘हैण्डबुक आन राजपूतस’ प्रथम प्रकाशित, लन्दन, 1899, पुनमुद्रित, लो प्राइस पब्लिकेशंस, दिल्ली, 1999, पृ.66, 67

5 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, ‘डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज, आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर’, इलाहाबाद, 1909, पृ.96-97

6 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, ‘डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज, आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर’, इलाहाबाद, 1909, पृ.101-103

मराठी शब्द की प्रचलन में आये जिनका प्रभाव आज भी विद्यमान है।⁷ बाँदा में राजपूतों के मध्य भाटों को शरण देने की प्रतिबद्धता थी। रसिकलाल, (जन्म 1823) हरिदास (1834 ई.) तत्कालीन समय में बाँदा के प्रसिद्ध कवि थे कालिंजर का किलेदार रामकिशन चौबे (1829 ई.) एक अच्छा कवि था जिसने “विनय पचीसी” की रचना की थी। हिम्मत बहादुर के परिवार के सदस्य स्कन्दगिरि गोसाई ने 1850 तक एक श्रृंगार कवि के रूप में ख्याति प्राप्त कर ली थी। दीवान प्रतिपाल सिंह ने अपने ग्रन्थ “बुन्देलखण्ड का इतिहास” में इन कवियों का विस्तृत विवरण दिया है।⁸ जहाँ तक समाज में ब्राह्मणों का प्रश्न है, वहाँ जनपद में कुछ ब्राह्मण परिवार भूस्वामित्व की दृष्टि से जाने जाते थे। इनमें हत्ते दुबे का परिवार (खण्डेहा), चौबे परिवार (गिरवाँ), ठाकुरदीन पाठक का परिवार, (नरैनी) सरजू प्रसाद का परिवार, (गिरवाँ) तिवारी परिवार (बदौसा) दीक्षित परिवार (पैलानी) बल्दूराम रूपोलिहा का परिवार (राजापुर), दुबे परिवार (सिमौनी) इत्यादि सम्पन्नता की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण थे तथा बाँदा जिले में बैंकर का कार्य भी करते थे।

बाँदा जनपद में प्रमुख व्यापारी परिवारों में सेठ किशनचन्द्र का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जो कि बाँदा नगर का सबसे बड़ा बैंकर था। किशन चन्द्र के पूर्वज गुजरात से आये थे 1857 में इसने अंग्रेजों का साथ दिया तथा अंग्रेजों ने पुरस्कार स्वरूप पैलानी का एक गाँव इसे प्रदान किया इसी प्रकार एक अन्य गुजराती व्यापारी श्यामकर्ण का नाम बाँदा के बड़े बैंकर में शामिल था। सेठ उत्तमराम को 1857 में सहायता के बदले अंग्रेजों ने एक गाँव पुरस्कार में दिया तथा पचनेही गाँव का आधा भाग खरीदने की अनुमति प्रदान की। जगन्नाथ रस्तोगी बबेरू का अग्रगणी व्यापारी था जो कि नमक और शोरे का व्यापार करता था। जदुराम कायस्थ बाँदा नगर में सर्वाधिक कायस्थ परिवार का मुखिया था जदुराम कायस्थ कलेक्टर कार्यालय में नाजिर था 1857 के पश्चात् हुये कैडेल के सिटिलमेन्ट में गिरवाँ तथा बदौसा में इस परिवार को 24891 एकड़ जमीन प्राप्त हुयी पैलानी तहसील में तिरेही कायस्थ का परिवार सम्पन्न था। 1857 के पूर्व नोनियत राय बाँदा का प्रसिद्ध वकील था। कायस्थ परिवारों को कुछ माफी गाँव भी प्राप्त थे। शेख यूसुफ उज्जमन तथा फहीम उज्जमन का परिवार बाँदा में सर्वाधिक धनाढ्य मुस्लिम परिवार था। इस परिवार को सम्पन्नता के कारण ‘नोटवाला’ कहा जाता था। 1857 के पश्चात् यूसुफ उज्जमन को ऑनरी मजिस्ट्रेट का दर्जा प्राप्त हुआ था। एक मुस्लिम राजपूत कुँवर नत्थेखान को बुन्देलखण्ड में नवाबों के प्रारम्भिक शासन काल में दीवानी का अधिकार प्राप्त था। दीवान नासिर अली तथा दरवेश अली का परिवार बाँदा में एक अन्य महत्वपूर्ण मुस्लिम परिवार था। हरदौली में अलीहुसैन खान का परिवार नवाबों के काल में एक सशक्त मुस्लिम परिवार था। भूस्वामित्व के आधार पर राजपूत बाँदा में सर्वाधिक सशक्त थे यद्यपि इतिहास में जय-पराजय के आधार पर इनके अधिकार क्षेत्र परिवर्तित होते रहे। प्रमुख राजपूतों का विवरण पहले ही दिया जा चुका है। 1857 के पृष्ठभूमि में लगभग एक तिहाई जनपद की भूमि पर राजपूतों का स्वामित्व था।⁹ बाँदा जनपद में यह आम धारणा है कि बाँदा जनपद में निवास करने वाले मुस्लिम जनसंख्या में से नव धर्मान्तरित मुस्लिम नवाबों के शासनकाल में धर्मान्तरित हुये परन्तु ये धारणा नितान्त भ्रामक है इसकी सत्यता का परीक्षण करने के लिए धर्मान्तरित मुस्लिमों का साक्षात्कार भी किया गया। ऐतिहासिक दृष्टि से अधिकांश धर्मान्तरण राजपूतों के किये गये तथा कैप्टन बिंगले के अनुसार औरंगजेब के शासनकाल में ये धर्मान्तरण एक सुनिश्चित उद्देश्य को लेकर किये गये क्योंकि हिन्दुओं में

7 गुप्ता, रामप्रकाश, ‘लैंग्वेज सर्वे ऑफ डिस्ट्रिक्ट’, हैम्बर्ग (जर्मनी) में भाषा विज्ञान में अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में प्रस्तुत शोध पत्र”, 1986, पृ.27 से 28

8 सिंह, दीवान प्रतिपाल, ‘बुन्देलखण्ड का इतिहास’ काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, 1929, पृ.256 से 310

9 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, ‘डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज, आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर’, इलाहाबाद, 1909, पृ.110-111, 115

राजपूत लड़ाकू जाति के रूप में मशहूर थे।¹⁰ अवध में मुस्लिमों का प्रवेश मुइजुद्दीन गोरी के आक्रमण के साथ हुआ था काफी समय बाद समरकन्द के सैयद हमदू ने अवध में अपनी सत्ता स्थापित की। सैयद हमदू ने शेख फतेह मुबारक की सहायता से यमुना नदी पार कर दिखित राजपूतों को हराकर औगासी का दुर्ग हथिया लिया तथा औगासी, बॉकल, शमसुद्दीनपुर, जफरपुर, निभौर में मुस्लिम बस्तियाँ बसायीं। सैयद हमदू का मकबरा औगासी के कच्चे किले पर आज भी स्थिति है और किले का शेष भाग यमुना नदी के कटाव में बह गया, जिसके अवशेष आज भी पाये जाते हैं।¹¹ औरंगजेब के शासनकाल में फतेह मुबारक को औगासी का काजी नियुक्त किया गया। औरंगजेब के शासनकाल में ही फतेहपुर के ललौली, बाँदा जिले में सादीमदनपुर, औगासी तथा हरदौली में दिखित तथा गौतम राजपूतों का सामूहिक धर्मान्तरण हुआ। सर जदुनाथ सरकार के अनुसार औरंगजेब ने नीचे ढंग से हिन्दुत्व पर हमला किया था।¹² बाँदा जनपद में धर्मान्तरण इसी प्रयास की एक कड़ी के रूप में था। बाँदा में मुस्लिमों की स्थिति में उस समय गिरावट आयी जब छत्रसाल ने इन क्षेत्रों को जीतकर अपनी सीमा में मिला लिया। ये क्षेत्र बुन्देला राजपूतों को दे दिये गये। नवाब अलीबहादुर प्रथम के शासनकाल में बाँदा नगर में मुस्लिमों को संरक्षण प्राप्त हुआ तथा यह संरक्षण सम्पूर्ण नवाबी तक विद्यमान रहा। अकबर के शासनकाल में औगासी के कुछ क्षेत्रों में माफी गाँव मुसलमानों को प्रदान किये गये सम्भवतः धार्मिक उद्देश्यों से ये माफी गाँव प्रदान किये जाते थे।¹³ नव परिवर्तित मुस्लिम समुदाय ने अपनी पुरानी परम्पराओं का पालन करना नहीं छोड़ा जैसे अधिकांश नव परिवर्तित मुस्लिम महिलायें सिन्दूर लगाती थी ये परम्परा आज भी बाँदा में देखी जा सकती है। इस समुदाय में विवाह के अवसर पर मण्डप बनाये जाने की प्रथा आज भी विद्यमान है। सम्भवतः समाज द्वारा पुनः स्वीकार न किये जाने के कारण ये पुनः हिन्दू नहीं बन सके। इन नव मुसलमानों में अपने पुराने वंश वृक्ष से तीज त्यौहार के सम्बंध बनाये रखे। समाजशास्त्रियों के लिये नव परिवर्तित मुस्लिम समुदाय का सामुदायिक आचरण शोध का विषय है।

शासकों के निवास स्थल, दुर्ग, महल तथा प्रशासनिक स्थल सदैव जनता के लिये महत्वपूर्ण होते रहे हैं। शासकों के शक्ति केन्द्र सुरक्षा की प्राथमिक भूमिका के साथ प्रशासनिक कार्यों के सम्पादन में योगदान देते थे तथा सामाजिकता को गहराई से प्रभावित करते थे। नवाबों के शासन में हुजूर दरबार, फीलखाना, ड्योढ़ी, मखरून खाना, बुतास, जेलखाना, तामीरात, जखीरात, मदरउल मुहामी तथा रिसाला आदि विभाग कार्यरत थे जहाँ से शासन का संचालन किया जाता था।¹⁴ आन्तरिक एवं वाह्य व्यवस्था का उत्तरदायित्व इन्हीं पर होता था। नवाबी शासन में न्याय व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था, कर एवं वेतन व्यवस्था के अतिरिक्त टकसाल, लेखागार, शास्त्रागार तथा पुस्तकालय भी महत्वपूर्ण थे। बाँदा के नवाबों में नवाब अली बहादुर प्रथम, गनीबहादुर, शमशेर बहादुर द्वितीय ने 1804 तक स्वतन्त्र सत्ता का उपभोग किया तथा 1804 के पश्चात् कर एवं लगान व्यवस्था, न्याय व्यवस्था तथा सामान्य प्रशासन ब्रिटिश अधिकारियों के हाथ में आ गया। अतः मुख्य रूप से 1819 से कलेक्टर का कार्यालय भी शक्ति केन्द्र बन गया। बाँदा में नवाबों के शक्ति केन्द्र भूरागढ़ दुर्ग, निम्नीपार महल, नवाब की बारादरी, नजरबाग कोठी तथा नवाब रेसकोर्स प्रमुख रूप से थे। आन्तरिक प्रशासन हेतु खुटला, खिन्नीनाका, मढ़िया नाका, मर्दन

10 बिंगले, कैप्टन ए.एच., 'हैण्डबुक आन राजपूतस' प्रथम प्रकाशित, लन्दन, 1899, पुनमुद्रित, लो प्राइस पब्लिकेशंस, दिल्ली, 1999, पृ.169 से 171

11 शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण दिनांक 18.05.2014

12 सरकार, जदुनाथ, 'हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब', खण्ड-5, कलकत्ता, 1924, पृ.393

13 हबीब, इरफान, 'मेडीवेल इण्डिया : ए स्टडी ऑफ सिविलाईजेशन', नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2008, पृ.131 से 134

14 लुआर्ड, कैप्टन, सी.ई., 'प्रोविन्सियल गजेटियर्स ऑफ इण्डिया', खण्ड-6 ए, सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी, लखनऊ, 1907, पृ.67

नाका, मेवाती नाका, बलखण्डी नाका तथा अलीगंज महत्वपूर्ण स्थल थे।¹⁵ आज भी नवाब से सम्बन्धित इमारतें भग्न अवस्था में शेष हैं जिनमें से कुछ के फोटोग्राफ शोध प्रबन्ध के अन्त में लगे हैं। 1819 के पश्चात् ब्रिटिश नियंत्रण में कलेक्टर कार्यालय, मजिस्ट्रेट की अदालत, तहसील भवन, डाक बगलों, डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर कार्यालय तथा जेल प्रमुख केन्द्र बने। नवाब अली बहादुर द्वारा संरक्षित सराय, जामा मस्जिद, ऐश बाग तथा पुराना तोषक खाना नवाबी तक सत्ता केन्द्र बने रहे। इन सत्ता केन्द्रों ने बाँदा की जनता को लगातार प्रभावित किया। नवाबी शासन में जिला कलेक्टर के कार्यालय से लगान वसूली का प्रबन्धन किया जाता था। अतः यह क्रमशः महत्वपूर्ण होते चले गये। इन शक्ति केन्द्रों से सरकारी आदेश जनता को प्रसारित किये जाते थे तथा जनता प्रत्येक निर्णय के लिये इन शक्ति केन्द्रों की ओर ध्यान लगाती थी। 1857 में कलेक्टर का कार्यालय नष्ट कर दिया तथा कई अन्य ब्रिटिश नियंत्रित इमारतों को आग लगाई गयी परन्तु 20 अप्रैल 1858 के पश्चात् पुनः कलेक्टर का कार्यालय शक्ति केन्द्र बन गया।¹⁶

बाँदा में ईसाईयत तथा अंग्रेजी प्रभाव 1804 से प्रारम्भ हुआ। ब्रिटिश सरकार और उसके अधिकारियों की प्रेरणा से ईसाई मिशनरियों का पदार्पण बाँदा जिले में हुआ। उनके धर्म प्रचार के तौर-तरीकों से धर्म भीरू हिन्दू और मुसलमान, सभी आशंकित हो उठे। ईसाई पादरियों को अंग्रेज अधिकारियों से जो प्रोत्साहन और संरक्षण मिलता था, वह भी उन्हें खटकता था। बाँदा में सन् 1950 के आस-पास लगभग 125 मदरसा और पाठशालायें थी। इनमें सामान्य हिन्दी, उर्दू, संस्कृत, अरबी, फारसी आदि पढ़ाई जाती थी। ईसाई पादरियों ने अब शिक्षा में भी दखल दिया। व्यक्तिगत रूप से वे जो कुछ ईसाई धर्म की शिक्षा-दीक्षा देने का प्रयत्न करते थे, वह उन्हें काफी नहीं लगा और अंग्रेज अधिकारियों के बढ़ावे पर अमेरिकन प्रेसबिटेरियन मिशन ने सन् 1856 में एक मिशन स्कूल खोल दिया। यह कि मिस्टर पाल की देख-रेख में चलने लगा। बाँदा के निकटवर्ती कस्बों, तिन्दवारी, सिहुँडा, कालिंजर, तरहुँवा (तरौंहा) कमासिन आदि में भी ईसाई प्रचारकों की गतिविधियाँ बढ़ने लगी।¹⁷ बाँदा में मिशन चर्च पहले ही स्थापित हो चुका था। बाँदा के तत्कालीन कलेक्टर एफ.ओ. मेन से चर्च और मिशनरियों को बराबर प्रोत्साहन मिल रहा था जिससे उनका रवैया अधिक उग्र और उत्तेजनापूर्ण होता जा रहा था। सती प्रथा के अन्त को लेकर लोग पहले से ही आन्दोलित थे। अब विधवा विवाह को वैध करने और ईसाई धर्म के प्रसार को सहज करने के उद्देश्य से प्रेरित धर्म-परिवर्तन के पश्चात् धर्म बदलुओं को अपनी पैतृक सम्पत्ति में भाग पा सकने के कानून बन जाने से जन साधारण की परम्परागत धार्मिक और सामाजिक आस्थाओं को गहरी चोट पहुँची। सन् 1857 के 'सिपाही विद्रोह' के इस धार्मिक पहलू के महत्व को स्वीकार करते हुये सुप्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. रमेश चन्द्र मजूमदार का यह कथन तथ्य सम्मत है कि "निःसंदेह इन शिकायतों में उनको सबसे गंभीर शिकायत थी, पुराने समय से चले आये धार्मिक रीति-रिवाजों और सामाजिक तौर-तरीकों एवं परम्पराओं में हस्तक्षेप किसी न किसी तरह उनमें से बहुत के मन में यह गहरी धारणा जड़ पकड़ गयी थी कि अंग्रेजों का समझा-बूझा उद्देश्य उन्हें प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष तरीको से ईसाई धर्म में दीक्षित करना है।"¹⁸ ईसाईयत के प्रचार ने बाँदा में 1857 की घटनाओं में तीव्रता उत्पन्न की। बाँदा में नवाबी के अन्त के बाद ही ईसाई स्कूल तथा चर्च पनप सके। बाँदा में आज भी कालखण्ड के दो चर्च मौजूद हैं। इन चर्चों ने बाँदा में सामाजिक विविधता को एक नया आयाम दिया।

15 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, 'डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज, आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर', इलाहाबाद, 1909, पृ.215

16 गुप्ता, बी.डी., 'मस्तानी बाजीराव एवं उनके वंशज बाँदा के नवाब', ग्वालियर 1983, पृ.113

17 ब्रोकमैन, डी.एल.ड्रेक, 'डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ यूनाइटेड प्रोविन्सेज, आफ आगरा एण्ड अवध बाँदा ए गजेटियर', इलाहाबाद, 1909, पृ.52-189

18 मजूमदार आर.सी., 'द सिपॉय म्युटिनी ऐंड द रिवोल्ट ऑफ 1857', कलकत्ता, 1957 पृ.172